पाठ 38

1. जब इस्राएलियों के पास पानी नहीं था, तो क्या उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया कि वह उन्हें पानी देगा?

-नहीं।

2. जब इस्राएलियों के पास पानी नहीं था तो उन्हें क्या करना चाहिए था?

-उन्हें पमेश्वर से पानी देने के लिए कहना चाहिए था।

3. पानी लाने के लिए परमेश्वर ने मूसा को क्या करने की आज्ञा दी?

-पमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान से बात करने की आज्ञा दी।

4. क्योंकि मूसा और हारून ने चट्टान से बातें नहीं की, वरन चट्टान को मारा, क्या परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया?

-हां।

5. परमेश्वर ने मूसा और हारून को कैसे दण्ड दिया?

- परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे कनान देश में प्रवेश नहीं करेंगे।

6. क्योंकि इस्राएली शिकायत करते रहे, तब परमेश्वर ने उनके साथ क्या किया?

-परमेश्वर ने कई जहरीले सांपों को उनके बीच भेजकर इस्राएलियों को दंडित किया।

7. पाप सांप के समान कैसा है?

-जैसे साँपों ने इस्राएलियों को डस लिया और वे मर गए, वैसे ही पाप लोगों को डसता है और वे मर जाते हैं।

8. इस्राएलियों को बचाने के लिए परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

-पीतल का साँप बनाना, और उसे डंडे पर रखना।

9. यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाया जाना था, तो उन्हें क्या करना चाहिए?

-पीतल के सांप को डंडे पर ऊपर की ओर देखें।

10. क्या वे इस्राएली जिन्होनें खम्भे पर पीतल के सांप को देखा था, जीवित रहे?

-हां।

11. क्या पीतल के साँप में इस्राएलियों को बचाने की शक्ति थी?

-नहीं।

12. इस्राएलियों को बचाने की शक्ति अकेले किसके पास थी?

-केवल पमेश्वर के पास।

13. क्या इस्राएलियों के पाप ने मृत्यु को बुलाया?

-हां।

14. यद्यपि इस्राएलियों के पाप ने मृत्यु का आह्वान किया, फिर भी परमेश्वर ने उन लोगों के लिए क्या किया जिन्होंने सांप को देखा था?

-पमेश्वर ने उन्हें बचा लिया।

-क्योंकि इस्राएली परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे, वे कनान में प्रवेश करने में सक्षम नहीं थे।

-क्योंकि इस्राएली परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे, वे चालीस वर्ष तक जंगल में भटकते रहे जब तक कि सभी वयस्क मर नहीं गए।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को दण्ड क्यों दिया?

-क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के उस वचन पर विश्वास करने से इनकार कर दिया जो मूसा ने उनके पास लाया था।

-जैसे मूसा ने इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का वचन लाया, वैसे ही मैं परमेश्वर का वचन तुम्हारे पास ला रहा हूं।

-यदि आप इस्राएलियों की तरह हैं और परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने से इनकार करते हैं, तो परमेश्वर आपको उसी तरह दंड देगा जैसे उसने इस्राएलियों को दण्ड दिया था।

-चालीस वर्ष के बाद और सभी वयस्कों की मृत्यु हो गई, परमेश्वर एक बार फिर इस्राएलियों को कनान की सीमा पर ले गया।

-क्योंकि मूसा ने परमेश्वर की अवज्ञा की थी, परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को कनान में ले जाने की अनुमति नहीं दी।

-क्योंकि परमेश्वर मूसा को इस्राएलियों को कनान में ले जाने की अनुमति नहीं देगा, परमेश्वर ने उनका नेतृत्व करने के लिए एक नए नेता को चुना।

आइए पढ़ें गिनती 27:18-20 और 22-23

18-तब यहोवा ने मूसा से कहा, नून के पुत्र यहोशू को, जिस में आत्मा है, ले, और उस पर अपना हाथ रख।

19-क्या वह एलीआजर याजक और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा हो, और उनके साम्हने उसे आज्ञा दे।

20-उसे अपने अधिकार में से कुछ दे, कि इस्राएल की सारी मण्डली उसकी आज्ञा मान ले।"

22-मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया। उसने यहोशू को पकड़कर एलीआजर याजक और सारी मण्डली के साम्हने खड़ा किया।

23 तब उस ने उस पर हाथ रखकर उसे आज्ञा दी, जैसा यहोवा ने मूसा के द्वारा आज्ञा दी या।

-इस्राएलियों का नया नेता कौन था जिसे परमेश्वर ने मूसा की जगह लेने के लिए चुना था?

-यहोशू।

-यहोशू के इस्राएलियों का नया नेता बनने के बाद, परमेश्वर ने मूसा को एक पहाड़ पर चढ़ने के लिए कहा जो कनान की सीमा के पास था।

-पहाड़ की चोटी पर, पमेश्वर ने मूसा को कनान की भूमि दिखाई, जिसे उसने इब्राहीम, इसहाक, याकूब और उनके वंशजों से वादा किया था।

आइए पढ़ें व्यवस्थाविवरण 34:1-4

1-तब मूसा नबो पर्वत पर मोआब के अराबा से निकलकर यरीहो के पार पिसगा की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ यहोवा ने उसे गिलाद से लेकर दान तक का सारा देश दिखाया,

2-नप्ताली का सारा देश, एप्रैम और मनश्शे का देश, यहूदा का सारा देश पच्छिम समुद्र तक,

3 नेगेव और यरीहो की घाटी से लेकर खजूर के शहर तक का सारा क्षेत्र, सोअर तक।

4-तब यहोवा ने उस से कहा, यह वही देश है, जिसके विषय में मैं ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से शपय खाकर कहा था, कि मैं इसे तेरे वंश को दूंगा। तुम उस में पार न पाओगे।"

-क्योंकि मूसा ने परमेश्वर की अवज्ञा की, परमेश्वर ने मूसा को कनान देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी।

-क्या परमेश्वर ने अपने वचन का पालन किया और मूसा को कनान देश में प्रवेश नहीं करने दिया?

-हां।

-पमेश्वर हमेशा अपना वचन रखते हैं।

-पमेश्वर अपने वचन को कभी नहीं तोड़ते।

-जब परमेश्वर ने मूसा को पहाड़ की चोटी से कनान देश दिखाया, तब मूसा की मृत्यु हो गई।

आइए पढ़ें व्यवस्थाविवरण 34:5

5-और यहोवा का दास मूसा वहां मोआब में मर गया, जैसा यहोवा ने कहा या।

-मूसा के मरने के बाद, परमेश्वर ने यहोशू से बात की।

-पमेश्वर ने यहोशू को कनान देश में प्रवेश करने की तैयारी करने के लिए कहा।

आइए पढ़ें यहोशू 1:1-2

1-यहोवा के दास मूसा के मरने के बाद यहोवा ने मूसा के सहयोगी नून के पुत्र यहोशू से कहा,

2-"मूसा मेरा दास मर गया। अब तुम और ये सब लोग, यरदन नदी को पार करने के लिए उस देश में जाने के लिए तैयार हो जाओ, जिसे मैं उन्हें देने जा रहा हूं, अर्थात इस्राएलियों को।"

-मूसा के मरने के बाद, यहोशू इस्राएलियों को कनान देश में ले गया।

-क्या परमेश्वर ने अपना वादा निभाया और इब्राहीम के वंशजों को कनान देश दिया?

-हां।

-जैसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से प्रतिज्ञा की थी, वैसे ही परमेश्वर ने कनान देश को इस्राएलियों को दे दिया।

-शैतान और फिरौन ने मिस्र में इस्राएलियों को गुलामी में रखने की कोशिश की।

-लेकिन परमेश्वर ने इस्राएलियों को कनान देश देने का अपना वादा निभाया।

-पमेश्वर हमेशा अपने वादे रखता है।

-पमेश्वर अपने एक भी वादे को कभी नहीं तोड़ सकते।

आइए पढ़ें यहोशू 11:23

23 इस प्रकार यहोशू ने सारी भूमि ले ली, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी या, और उसने इस्राएल को उनके गोत्रोंके भाग के अनुसार उनका भाग कर दिया।

-इस्राएली अब कनान देश में रहते थे।

-जब तक यहोशू जीवित रहा, तब तक इस्राएलियों ने परमेश्वर को स्मरण किया।

आइए पढ़ें न्यायियों 2:7

7 लोगों ने यहोशू और उसके पुरनियों के जीवन भर यहोवा की उपासना की, और उन पुरनियों ने, जो यहोवा ने इस्राएल के लिथे किए हुए सब बड़े बड़े काम देखे थे।

-कुछ समय बाद यहोशू बूढ़ा हो गया और मर गया।

आइए पढ़ें न्यायियों 2:8-9

8-यहोवा का दास नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष की अवस्था में मर गया।

9-और उन्होंने उसको उसके निज भाग में गाश पर्वत के उत्तर में एप्रैम के पहाड़ी देश के तिम्नाथ हेरेस में मिट्टी दी।

-जब तक यहोशू जीवित था, इस्राएलियों ने परमेश्वर को याद किया।

-यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने क्या किया?

आइए पढ़ें न्यायियों 2:10-13

10-जब सारी पीढ़ी अपके पितरोंके पास इकट्ठी हो गई, तब एक और पीढ़ी बड़ी हुई, जो न तो यहोवा को जानते थे, और न उस ने इस्राएल के लिथे क्या किया है।

11-तब इस्राएलियों ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और बाल देवताओं की उपासना की।

12-उन्होंने अपके पितरों के परमेश्वर यहोवा को, जो उनको मिस्र देश से निकाल लाया या, त्याग दिया। उन्होंने अपने आसपास के लोगों के विभिन्न देवताओं का अनुसरण किया और उनकी पूजा की। उन्होंने यहोवा को क्रोधित किया

13-क्योंकि उन्होंने उसे छोड़ दिया, और बाल और अश्तोरेत के लोगों की उपासना की।

-यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने परमेश्वर को ठुकरा दिया और वे बहुत दुष्ट हो गए।

-यहोशू की मृत्यु के बाद, इस्राएलियों ने पमेश्वर के बजाय छवियों को बनाया और छवियों की पूजा की।

-जो लोग कनान में इस्राएलियों के पास रहते थे, वे बाल और अशतोरेत नामक मूरतों की पूजा करते थे।

-क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर को ठुकरा दिया, उन्होंने भी बाल और अश्तोरेत की मूरतों को दण्डवत किया।

-किस ने इस्राएलियों को धोखा दिया कि उन्होंने परमेश्वर को ठुकरा दिया और मूर्तियों की पूजा की?

-शैतान ने।

-शैतान ने लोगों को धोखा दिया, और लोगों ने सोचा कि वे परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं।

-लेकिन लोग पमेश्वर की पूजा नहीं कर रहे थे।

-लोग शैतान की पूजा कर रहे थे जो बाल और अश्तोरेत की मूर्तियों में छिपा हुआ था।

-जैसे शैतान आदम और हव्वा को धोखा देने के लिए सांप में छिपा था, उसी तरह शैतान भी लोगों को धोखा देने के लिए बाल और अश्तोरेत की छवियों में छिपा था।

-शैतान भी आत्माओं और पुश्तैनी आत्माओं के पीछे छिपा है।

-लोग सोचते हैं कि जब वे आत्माओं और पुश्तैनी आत्माओं की पूजा कर रहे होते हैं, तो वे पमेश्वर की पूजा कर रहे होते हैं.

-लेकिन वे पमेश्वर की पूजा नहीं कर रहे हैं; वे केवल शैतान की पूजा कर रहे हैं।

-अगर हम पमेश्वर के अलावा किसी और की पूजा करते हैं, तो हम किसकी पूजा कर रहे हैं?

-शैतान की।

-शैतान लोगों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए क्यों ले जाता है?

-क्योंकि शैतान परमेश्वर से घृणा करता है, और नहीं चाहता कि कोई परमेश्वर की आराधना करे।

-क्योंकि शैतान सभी लोगों से घृणा करता है, और नहीं चाहता कि कोई भी परमेश्वर द्वारा बचाया जाए।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएली बाल और अश्तोरेत की मूरतों की पूजा कर रहे थे?

-हां।

-क्या बाल और अश्तोरेत की मूरतों की उपासना करने के कारण परमेश्वर इस्राएलियों से क्रोधित हुआ?

-हां।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ क्या किया?

आइए पढ़ें न्यायियों 2:14-15

14-इस्राएल पर अपके कोप के कारण यहोवा ने उनको लूटनेवालोंके वश में कर दिया। उसने उन्हें चारों ओर से उनके शत्रुओं को बेच दिया, जिनका वे अब विरोध करने में सक्षम नहीं थे।

15-जब-जब इस्राएली युद्ध करने को निकले, तब यहोवा का हाथ उनके विरुद्ध लड़ने के लिथे उस की शपय खाकर उन पर चढ़ाई करता या।। वे बड़े संकट में थे।

-क्योंकि इस्राएली अब परमेश्वर की उपासना नहीं करते थे, परन्तु बाल और अश्तोरेत की मूरतों की पूजा करते थे, परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया।

-पमेश्वर ने इस्राएलियों को छवियों की पूजा करने के लिए कैसे दंडित किया?

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के शत्रुओं को भेजा कि वे आकर इस्राएलियों की सारी फसल नष्ट कर दें।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के शत्रुओं को उनके सब पशुओं को चुरा लेने के लिये भेजा।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के शत्रुओं को भेजा कि वे आकर इस्राएलियों को अपना दास बना लें।

-जब इस्राएलियों ने अपने पापों को स्वीकार किया, और परमेश्वर से उन्हें बचाने के लिए कहा, तो परमेश्वर ने क्या किया?

आइए पढ़ें न्यायियों 2:16

16-तब यहोवा ने न्यायियों को खड़ा किया, जिन्होंने उन्हें इन लुटेरोंके हाथ से बचाया।

-जब इस्राएलियों ने अपने पापों को स्वीकार किया, और परमेश्वर से उन्हें बचाने के लिए कहा, तो परमेश्वर इस्राएलियों में से पुरुषों और महिलाओं को चुनेगा जो इस्राएलियों को उनके शत्रुओं को हराने के लिए नेतृत्व करेंगे।

-इन पुरुषों और महिलाओं को क्या कहा जाता था जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके शत्रुओं को हराने के लिए नेतृत्व करने के लिए चुना था?

-न्यायाधीशों।

-जब तक परमेश्वर ने जिस न्यायी को चुना वह जीवित था, तब तक इस्राएली परमेश्वर का अनुसरण करते रहेंगे।

-फिर भी जब परमेश्वर ने जिस न्यायी को चुना वह मर जाएगा, तब इस्राएली परमेश्वर के स्थान पर मूर्तियों की पूजा करने के लिए लौट आएंगे।

आइए पढ़ें न्यायियों 2:17-19

17-तौभी उन्होंने अपके न्यायियोंकी न मानी, वरन दूसरे देवताओं के आगे वेश्यावृत्ति करके उनकी उपासना की। वे अपके पुरखाओं के विपरीत, जिस मार्ग से उनके पुरखा चले थे, उस से वे फुर्ती से मुड़ गए, और वे यहोवा की आज्ञाओं को मानने लगे।

18-जब-जब यहोवा उनके लिये न्यायी खड़ा करता, तब तक वह न्यायी के संग रहता, और जब तक न्यायी जीवित रहा, तब तक वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से बचाता रहा; क्योंकि जब वे उन पर अन्धेर करनेवालोंके साम्हने कराहते थे, तब यहोवा ने उन पर तरस खाया।

19-परन्तु जब न्यायी की मृत्यु हुई, तब प्रजा अपके पितरोंसे भी अधिक भ्रष्ट हो गई, और पराए देवताओं के पीछे पीछे चलकर उनकी उपासना और उपासना करते थे। उन्होंने अपने बुरे कामों और हठीले तरीकों को छोड़ने से इनकार कर दिया।

-भले ही परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके पाप के लिए दंडित किया, फिर भी परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया और उनकी रक्षा की।

-परमेश्वर ने अभी भी इस्राएलियों से प्रेम और रक्षा क्यों की?

-क्योंकि परमेश्वर ने वादा किया था कि अब्राहम, इसहाक और याकूब के कई वंशज होंगे जो एक महान लोग बनेंगे।

-क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों के वंशजों के द्वारा उद्धारकर्ता को भेजने का वचन दिया था।

-क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों के वंशजों के माध्यम से अपना संदेश, बाइबल भेजने का वादा किया था।

-पमेश्वर चाहता है कि सभी लोग उसका संदेश सुनें ताकि वे बचाए जा सकें।

-इस्राएलियों का अंतिम न्यायी कौन था?

-शमूएल।

-शमूएल कई वर्षों तक इस्राएलियों का न्यायी रहा।

-जब शमूएल बूढ़ा हो गया, तो उसका स्थान लेने वाला कोई न था, क्योंकि शमूएल के पुत्र परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते थे।

आइए पढ़ें 1 शमूएल 8:1-3

1-जब शमूएल बूढ़ा हुआ, तब उस ने अपके पुत्रोंको इस्राएल का न्यायी ठहराया।

2-उसके जेठे का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह था, और वे बेर्शेबा में सेवा करते थे।

3-परन्तु उसके पुत्र उसके मार्ग पर न चले। वे बेईमान लाभ के बाद अलग हो गए और रिश्वत स्वीकार कर लिया और न्याय को विकृत कर दिया।

-क्योंकि शमूएल बूढ़ा हो गया था, और क्योंकि शमूएल का स्थान लेने वाला कोई न था, इस्राएली इकट्ठे होकर शमूएल से भेंट करने आए।

आइए पढ़ें 1 शमूएल 8:4-6

4-तब इस्त्राएल के सब पुरनिये इकट्ठे होकर रामा में शमूएल के पास आए।

5-उन्होंने उस से कहा, तू तो बूढ़ा है, और तेरे पुत्र तेरे मार्ग पर नहीं चलते; अब हमारी अगुवाई करने के लिए एक राजा नियुक्त करो, जैसा कि अन्य सभी राष्ट्रों के पास है।"

6-परन्तु जब उन्होंने कहा, "हमें एक राजा दे जो हमारी अगुवाई करे," इस से शमूएल अप्रसन्न हुआ; इसलिए उसने यहोवा से प्रार्थना की।

-शमूएल के मरने से पहले, इस्राएलियों ने शमूएल से क्या करने को कहा था?

-इस्राएलियों ने शमूएल से उनकी अगुवाई के लिए एक राजा चुनने को कहा।

-इससे शमूएल दुखी क्यों हुआ?

-शमूएल दुखी था क्योंकि इस्राएली अपने राजा के रूप में परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे थे।

-जब इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया गया, तब उनका राजा कौन था?

-पमेश्वर।

-जब इस्राएलियों को जंगल में ले जाया गया, तब उनका राजा कौन था?

-पमेश्वर।

-इस्राएलियों का राजा कौन था जब उन्हें जंगल में भोजन और पानी दिया गया था?

-पमेश्वर।

-जब इस्राएलियों को कनान देश दिया गया, तब उनका राजा कौन था?

-पमेश्वर।

-कई सालों तक परमेश्वर इस्राएलियों का राजा रहा था।

-जब से परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र में उनके दासत्व से छुड़ाया, तब से परमेश्वर उनका राजा था।

-लेकिन अब, इस्राएली अब परमेश्वर को अपना राजा नहीं बनाना चाहते थे।

-इस्राएली अपने बगल में रहने वाले दुष्ट लोगों की तरह बनना चाहते थे, और एक राजा के रूप में एक आदमी चाहते थे।

-इस्राएली परमेश्वर को अपना राजा मानने से इन्कार कर रहे थे।

-यहाँ परमेश्वर ने शमूएल से क्या कहा:

आइए पढ़ें 1 शमूएल 8:7-8

7-और यहोवा ने शमूएल से कहा, जो कुछ लोग तुझ से कह रहे हैं, वह सब सुन; यह तुम नहीं हो, जिसे उन्होंने ठुकराया है, परन्तु उन्होंने मुझे अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है।

8-जैसा वे उस दिन से लेकर आज तक करते आए हैं, जब से मैं उन्हें मिस्र से निकाल ले आया हूं, और मुझे त्यागकर और देवताओं की उपासना करते रहे हैं।"

-परमेश्वर ने शमूएल से क्या कहा?

-पमेश्वर ने शमूएल से कहा कि इस्राएली शमूएल को खारिज नहीं कर रहे थे।

-पमेश्वर ने शमूएल से कहा कि क्योंकि इस्राएली एक राजा चाहते थे, वे पमेश्वर को अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर रहे थे।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को एक राजा दिया था?

आइए पढ़ें 1 शमूएल 11:14-15

14-तब शमूएल ने लोगोंसे कहा, आओ, हम गिलगाल को चलें, और वहां राज्य की पुष्टि करें।

15-तब सब लोगोंने गिलगाल को जाकर यहोवा के साम्हने शाऊल को राजा ठहराया। और वहां उन्होंने यहोवा के साम्हने मेलबलि की भेंट चढ़ाई, और शाऊल और सब इस्राएलियोंने बड़ा उत्सव मनाया।

-हालाँकि इस्राएलियों ने परमेश्वर को अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें एक और राजा दिया।

-उसका नाम शाऊल था।

-शाऊल इस्राएलियों का राजा बनने वाला पहला व्यक्ति था।